कुल पृष्ठ संख्या– 28 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या 0934531

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

B.S.E.R. H

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान अजमेर

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	8½	19	
2	5	20	
3	10	21	
4	1½	22	
5	1½	23	
6	1½	24	
7	1½	25	
8	1½	26	
9	1½	27	
10	1½	28	
11	1½	29	
12	1½	30	
13	1½	31	
14	3	योग	55½
15	3	प्राप्तांकों का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	4	55½	छप्पन
18	4		

परीक्षक के हस्ताक्षर ___

संकेतांक | 3 | 7 | 9 | 0 | 2 |

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिए)

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ☑ अंग्रेजी ☐

विषय जीव विज्ञान

परीक्षा का दिन शनिवार

दिनांक 28-02-26

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालन अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थः 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 60 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज़ ही उपयोग में लिया गया है। 181 / 2026

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।

2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर ही अपना नामांक लिखें।

3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।

4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगीः–

   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।

   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिए। परीक्षार्थी उत्तर पुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।

   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केल्क्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।

   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिख कर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिए, इसकी जांच कर लें।

   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।

5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।

6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।

7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		खण्ड – अ
	1	
1/2	(i)	(अ) केला
1/2	(ii)	(ब) वैलिसनेरिया
1/2	(iii)	(स) ऑक्सीटोसिन
1/2	(iv)	(अ) युक्रोमेरीन
1/2	(v)	(द) (अ) डीव्रीज, कॉरेंस व शेरमाक
1/2	(vi)	(ब) टर्नर सिंड्रोम
0	(vii)	(अ) 500
1/2	(viii)	(अ) उत्पादक
1/2	(ix)	(स) शीर्ष
1/2	(x)	(अ) तुंबिका
1/2	(xi)	(द) परजीविता
1/2	(xii)	(स) उल्टा

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1/2	(xiii)	(द) हृदयरोग
1/2	(xiv)	(अ) साइटोसीन
1/2	(xv)	(द) राइजोबियम
1/2	(xvi)	(स) पी. फाल्सीपेरम
1/2	(xvii)	(द) पुष्पक्रम
1/2	(xviii)	(द) प्रजाति
8 1/2		
	(2)	
1/2	(i)	कार्पस ल्यूटियम
1/2	(ii)	फ्रेम शिफ्ट या उत्परिवर्तन
1/2	(iii)	उपहासित आनुवांशिक कूट
1/2	(iv)	सैकेरोमाइसीस सैरेवेसी
1/2	(v)	ADA (एडीनोसिन डाई एमीनेज)
1/2	(vi)	एण्ड्रोजन (टेस्टेस्टेरॉन)

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
½	(vii)	प्रतिबंधन एण्डोन्यूक्लिएज
½	(viii)	लखनऊ
½	(ix)	अभिसारी
½	(x)	650 - 800 CC
5		

(3)

(i) उल्बवेधन :- गर्भ में भ्रूण एक तरल में पाया जाता है जिसे एम्नियोन या उल्ब तरल कहते हैं जो उल्ब गुहा में पाया जाता है। इंजेक्शन या सुई की मदद से इस तरल को बाहर निकाला जाता है तथा परीक्षण किया जाता है कि भ्रूण में विकृति है या नहीं, इस प्रक्रिया को उल्बवेधन कहते हैं। — 1

(ii) आनुवांशिक विकार क्लाइनफेल्टर सिंड्रोम का कारण नर में एक X गुणसूत्र की अधिकता होती है। जिससे नर में मादा के लक्षण प्रकट होते हैं। — 1

गुणसूत्र :- XXY हो जाते हैं।

→ नर बंध्य होगा।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
1	(iii)	ट्राइकोडर्मा पोलीस्पोरम का उपयोग पादप रोगों के उपचार में किया जाता है।
1	(iv)	मिलोइडोगाइन इनकोग्निटा व मिलोइडोगाइन जेवेनिका सूत्रकृमि तंबाकू की जड़ों को संक्रमित करता है।
1	(V)	आप्रवासन :- जीवों की संख्या जो किसी समय उस आवास में आकर रहने लगती है आप्रवासन कहलाता है → इसे 'I' से प्रदर्शित करते हैं → ये समष्टि घनत्व को बढ़ाने वाला कारक है।
1	(Vi)	वर्णांधता में व्यक्ति हरे एवं लाल रंग में विभेद नहीं कर पाता है। → इसीलिए इस रोग को हरा लाल अंधापन भी कहते हैं।
1	(Vii)	साल्मोनेला टाइफी जीवाणु से मनुष्य में टाइफाइड ज्वर होता है।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(viii) सहभोजिता का उदाहरण :-

1

- चारण पशु व बगुला पक्षी निकट साहचर्य
- व्हेल एवं बार्नेकिल

(ix) कपास के मुकुल कृमि को नियंत्रित करने के लिए प्रोटीन्स क्राई-IAc व क्राई IIAB जीन द्वारा कूटबद्ध होते है

1

(x) उपरोक्त परिपक्व भ्रूणकोष के आरेखीय चित्र में

1

A - ध्रुवीय केन्द्रक (केन्द्रीय कोशिका)

B - अण्डकोशिका।

10

खण्ड - ब

(4.) परजीविता :- ऐसी समष्टि पारस्परिक क्रिया जिसमें एक जीव दूसरे जीव पर निर्भर रहता है तथा उससे पोषण प्राप्त करता है, परजीविता कहलाती है।

1/2

→ इस क्रिया में एक जीव को लाभ होता है तथा दूसरे जीव को हानि होती है।

→ परपोषी परजीवी पर आश्रित रहते है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उदाहरण :-

(i) अण्डपरजीविता (कोयल के अण्डे कौओं के घोंसले में)

(ii) मानव और जूँ।

(iii) घोड़ा और जोंक।

(5) स्वस्थाने संरक्षण :- ऐसा संरक्षण जिसमें जीवों को उनके प्राकृतिक आवास में सुरक्षित रखा जाता हैं तथा संरक्षण किया जाता हैं स्वस्थाने संरक्षण कहलाता है

उदाहरण :- • राष्ट्रीय उद्यान
• वन्यजीव अभ्यारण्य
• जैव विविधता आरक्षित क्षेत्र
• पवित्र उपवन
• तात स्थल

→ वर्तमान में भारत में ~~90~~ ~~[illegible]~~ 106 राष्ट्रीय उद्यान है

(6) मधुमक्खी में लिंग निर्धारण :-

→ मधुप (मधुमक्खी) में लिंग निर्धारण XX-XO

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

प्रकार का होता है।
→ लिंग निर्धारण अगुणित - द्विगुणित प्रणाली द्वारा होता है।
→ नर अगुणित होता है तथा मादा द्विगुणित होती है।
→ नर का निर्माण अनिषेकजनन से होता है।
2, लिंग निर्धारण नर द्वारा होता है।

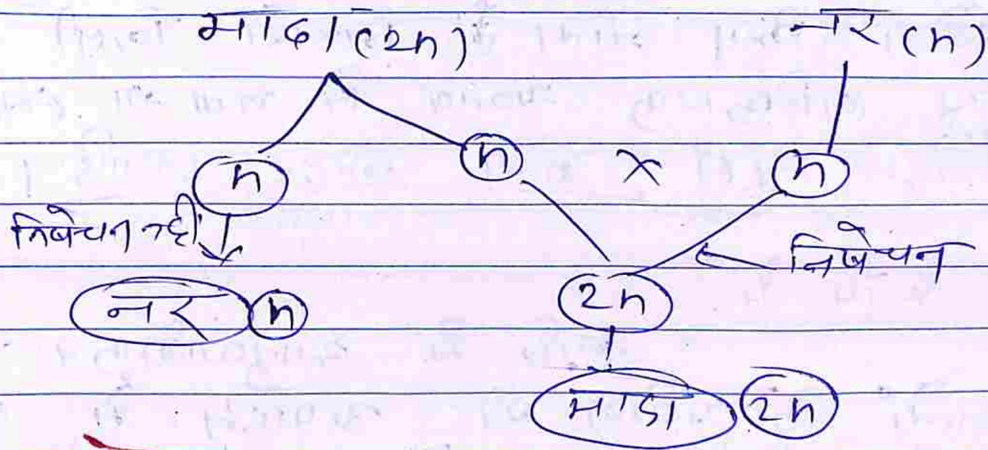

1½

2, मादा का निर्माण निषेचन से तथा नर का अनिषेकजनन से होता है।

(7.) प्रतिकृति की उत्पत्ति क्लोनिंग संवाहक का एक महत्वपूर्ण गुण है।
2, क्लोनिंग संवाहक में प्रतिकृति स्थल पाये जाते हैं जहां वांछित जीन को जोड़ने पर करोड़ों प्रतियां बनाई जा सकती हैं।
2, प्रतिकृति स्थल के रूप में क्लोनिंग संवाहक में [ori] स्थल पाया जाता है।
उदा. PBR 322 में ori स्थल।

1½

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(8) पारजीवी जंतुओं का उपयोग जैव उत्पाद हेतु निम्न प्रकार से किया जाता हैं:-

(i) चिकित्सा में :-

पारजीवी जंतुओं का किसी टीके के परीक्षण के लिए उपयोग किया जाता हैं, विभिन्न प्रकार की औषधियों का मानव पर प्रयोग से पहले पारजीवी जन्तुओं पर प्रयोग किया जाता हैं जिससे किसी व्यक्ति पर हानिकारक प्रभाव से बचा जा सकता हैं। जैसे :- चूहा, कुत्ता, बन्दर इत्यादि।

(ii) कृषि में :-

कृषि में आनुवांशिकत: रूपांतरित फसलों के प्रयोग से उत्पादन में काफी वृद्धि हुई हैं। रसायनो व कीटनाशकों के प्रभाव से बचा जा सकता हैं। कम अवधि में ज्यादा उत्पादन संभव हैं।

(iii) रोजी गाय :-

यह एक आनुवांशिकत: रूपांतरित गाय हैं जिसके दूध में अधिक मात्रा में प्रोटीन मिलता हैं लगभग 2.5 gm/लीटर

— इसका दूध छोटे बच्चों के लिए लाभदायक हैं।

(iv) ईकासीमा के उपचार में।

(v) इन्सुलिन के निर्माण में।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(9) बायोलिस्टिक या जीन :- यह एक उपकरण है जिससे वांछित जीन का परपोषी कोशिका में स्थानांतरण किया जाता है।

→ इस विधि में वांछित जीन को सोने या टंगस्टन के छोटे कणों पर लपेटा जाता है तथा तीव्र वेग से परपोषी कोशिका में दागा दिया जाता है जो एक गोली की भांति कार्य करता है तथा कोशिका में प्रवेश कर जाता है।

→ इस विधि का प्रयोग कोशिका भित्ति युक्त कोशिकाओं में किया जाता है।

1/2

(10) जैव विविधता का अक्षांशीय प्रवणता प्रतिरूप :-

→ इस सिद्धांत के अनुसार भूमध्य रेखा से उत्तर या दक्षिण की तरफ जाने पर जैसे-जैसे अक्षांश में वृद्धि होती है वैसे-वैसे जैव विविधता में कमी होती है।

→ जिस प्रकार शीतोष्ण क्षेत्रों की तुलना में उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में जैव विविधता अधिक होती है।

1/2

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

(11) मानव में शुक्रजनन का आरेखीय निरूपण :-

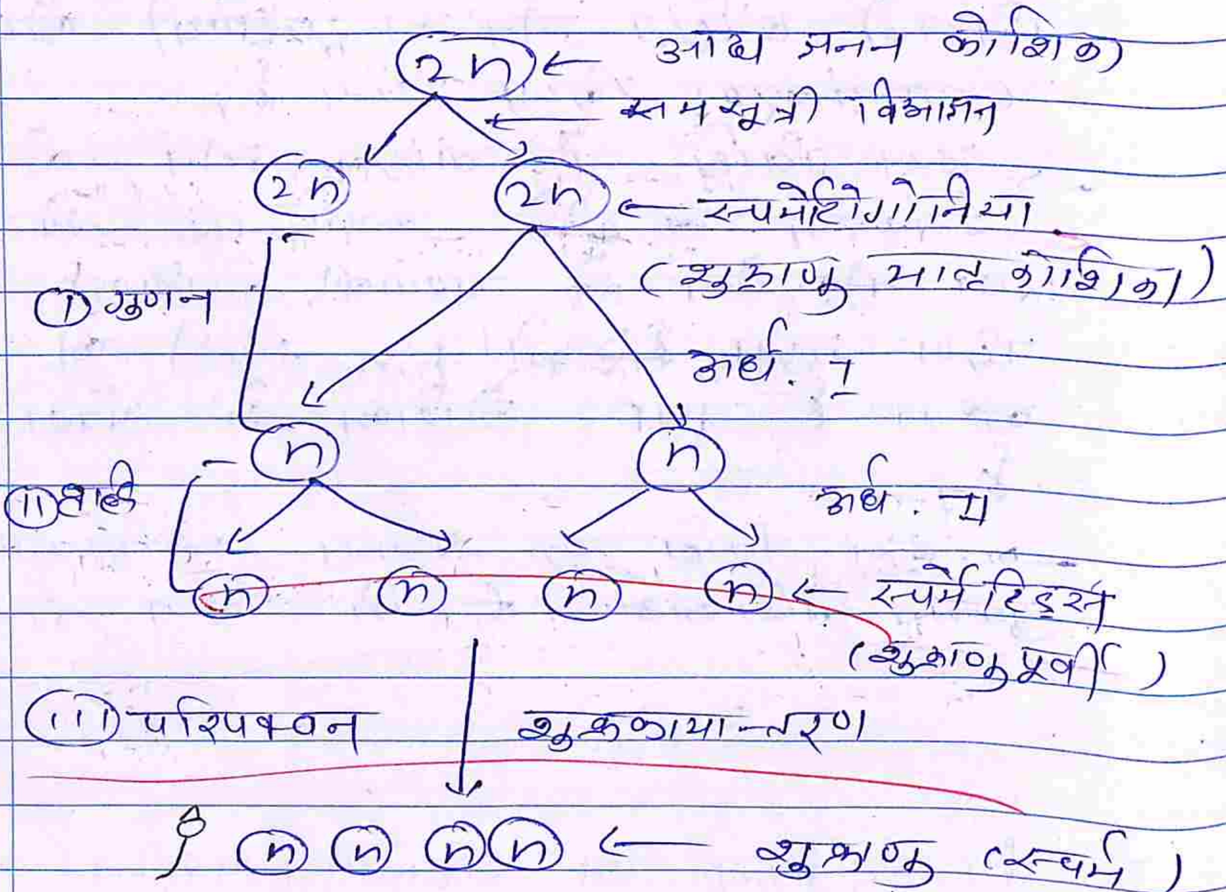

1/2

→ शुक्राणु मातृ कोशिका में अर्धसूत्री विभाजन से चार अगुणित शुक्राणुओं के निर्माण की प्रक्रिया को शुक्रजनन कहते है।

(12) कॉलम - I कॉलम - II

[(A),(ii)] , [(B),(i)] व [(C),(iii)]

1/2

A) होमो हैबिलिस → (ii) संभवत: मांस नहीं खाते थे

(B) होमो इरेक्टस → (i) संभवत: मांस खाते थे।

(C) ड्रायोपिथिकस → (iii) वनमानुष (ऐप) जैसे थे।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(13) न्यूक्लियोसोम की संरचना :→

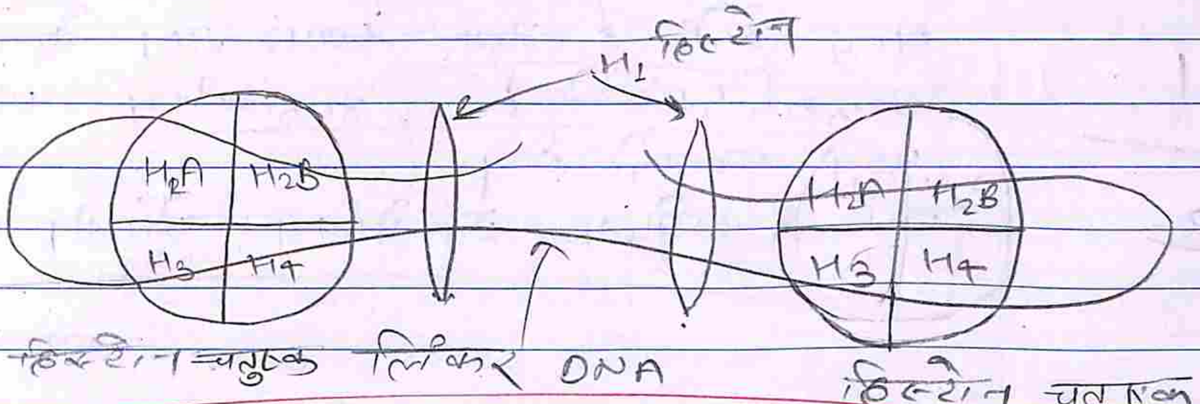

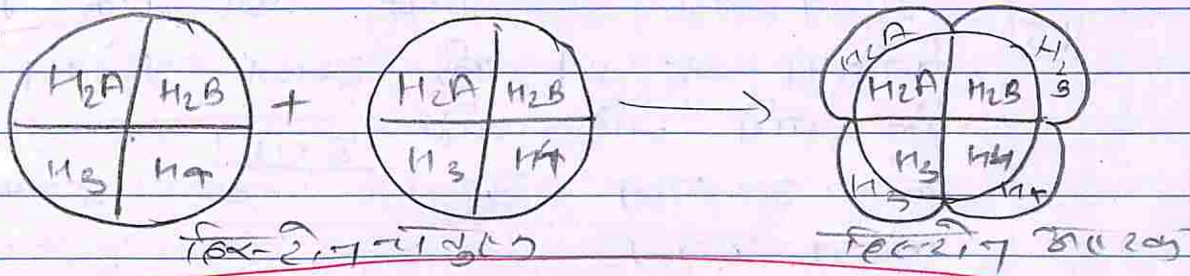

खण्ड - स

(14) परागण :- परागकणों का परागकोष से स्त्रीकेसर के वर्तिकाग्र पर पहुंचना या स्थानांतरित होना, परागण कहलाता है।

अनुन्मील्य परागणी पुष्प :- ऐसे पुष्प जो खुले होते हैं अर्थात इनमें केवल स्वपरागण होता है।
→ ये स्वपरागण के लिए अनुकूलित होते हैं।
उदा :- वायोला, ऑक्सेलिस, कोमेलिना (कनकौआ)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अनुन्मील्य परागणी पुष्प :-

ऐसे पुष्प जो ऊपर से बन्द होते हैं तथा स्वपरागण के लिए अनुकूलित होते हैं, अनुन्मील्य परागणी पुष्प कहलाते हैं।

उदा. → वायोला, ऑक्सेलिस, कोमेलीन (कनकौआ)

1/3

(15) मानव जीनोम परियोजना की एक मुख्य विशेषता यह थी कि इसका उद्देश्य मानव में पाये जाने वाले 3×10^9 क्षार युग्मों का अध्ययन करना तथा इनका संग्रहण करना था।

मानव 3164.7 मिलियन क्षार युग्म पाये जाते हैं

1

अंतरण (t-RNA) आरएनए की संरचना :-

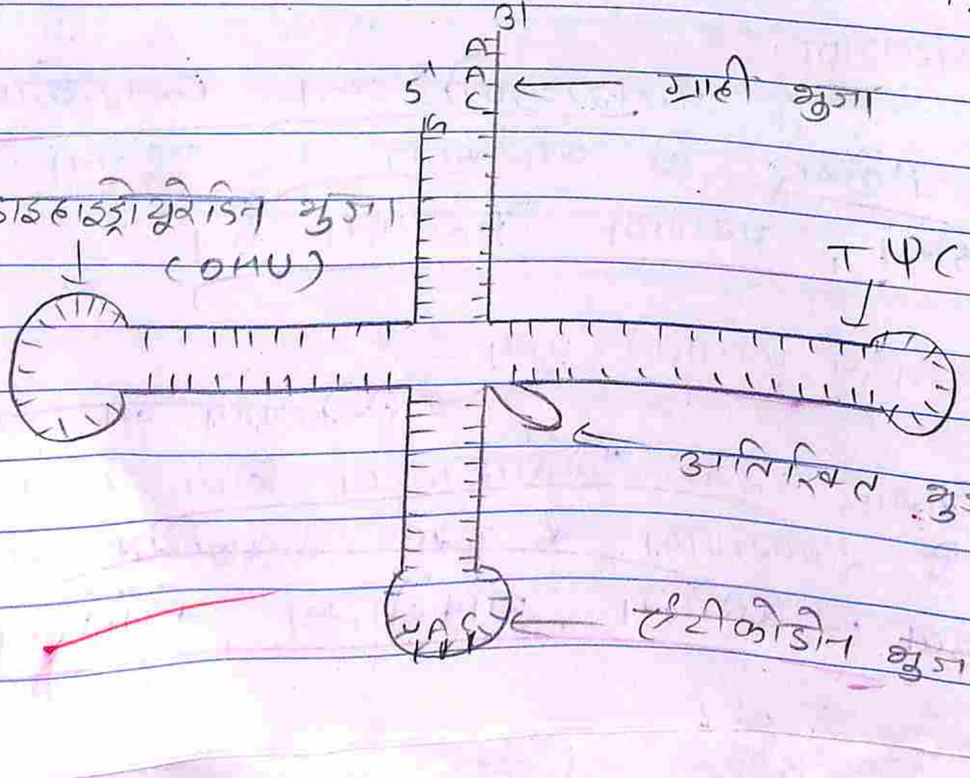

2/3

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(16) ~~16~~

वाहितमल :-

घरों से अपशिष्ट के रूप निकलने वाला जल वाहितमल कहलाता है।
जिसमें शौचालय, बर्तन धोने का पानी आदि शामिल होते हैं।

→ शहरों में वाहितमल एक भारी समस्या हैं क्योंकि उचित निष्कर्षण नहीं होने के कारण नालियों से बाहर आ जाता है।

→ यदि वाहितमल को सीधे नदियों में छोड़ दिया जाए तो यह विभिन्न बिमारियों का कारण बन सकता हैं इसलिए इसका उचित समाधान आवश्यक है।

→ वाहितमल में अनेक मच्छर उत्पन्न होते हैं जो डेंगू व मलेरिया जैसी घातक बिमारियों का कारण बन सकते हैं।

→ वाहितमल में विभिन्न प्रकार के वायरस व जीवाणु भी पाये जाते हैं जो हमारे शरीर में घुसकर रोग उत्पन्न करते हैं।

→ इसका मुख्य घटक मानव मूत्र होता हैं,

→ यह जल प्रदूषण फैलाने का कार्य करता हैं।

→ वाहितमल युक्त पानी फसलों को देने पर उत्पादन में कमी हो सकती हैं। इत्यादि वाहितमल से होने वाले नुकसान हैं।

3

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

(खण्ड- द)

(17) जैवमात्रा के पिरैमिड :-

किसी पारितंत्र में विभिन्न पोषक स्तरों में जैव मात्रा (भार) को प्रदर्शित करने के लिए बनाये गये पिरैमिड को, जैव मात्रा के पिरैमिड कहलाते हैं,

(अ) स्थलीय पारितंत्र में :-

स्थलीय पारितंत्र में जैवभार का पिरैमिड सीधा बनता है क्योंकि उत्पादक स्तर पर मौजूद जीवों का भार उपभोक्ता स्तर पर मौजूद जीवों के भार से अधिक होता है,

शीर्ष उपभोक्ता ← शेर, बाज़ (सर्प)
द्वितीयक उपभोक्ता (कुत्ता, भेड़िया, सियार, मेंढक)
प्राथमिक उपभोक्ता (कीट, बकरी)
उत्पादक (घास, झाड़ी, पेड़)

(ब) जलीय पारितंत्र में :-

जलीय पारितंत्र में जैवभार का पिरैमिड उल्टा बनता है क्योंकि इसमें उत्पादक स्तर पर छोटे पादपप्लवक होते हैं किंतु उपभोक्ता स्तर पर बड़ी मछलियां होती हैं जिनका भार अधिक होता है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

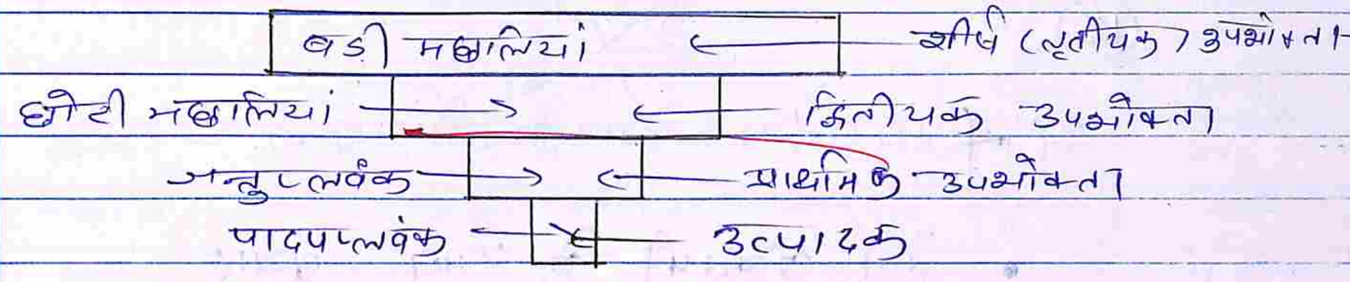

1

(ब) वृक्ष पारितंत्र में :-

1+1+1+1=4

वृक्ष पारितंत्र में जैव भार का पिरैमिड सीधा बनता है क्योंकि पेड़ का भार सूक्ष्मजीवो से अधिक होता है।

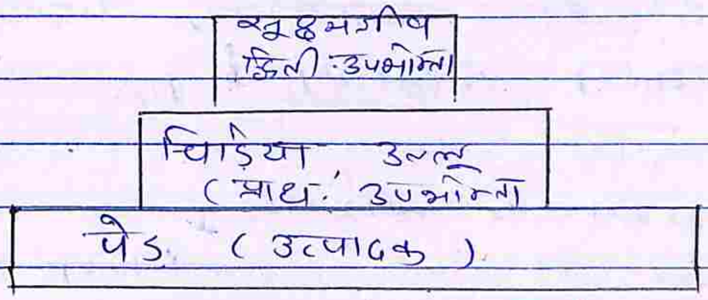

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

~~(16) अथवा~~

(ii) मलेरिया रोग के दो लक्षण :-

- तेज कंपकंपी के साथ बुखार
- ~~खांसी होना~~
- बुखार की 3-4 दिन बाद पुनरावृत्ति

(17)

(ii) अपघटन :- सड़े-गले एवं मृत पदार्थों का सूक्ष्मजीवों द्वारा अपचयन कर कार्बनिक पदार्थों से अकार्बनिक पदार्थों में बदलना, अपघटन कहलाता है।

अपघटन की प्रक्रिया :- निम्न चरण होते हैं

(i) खण्डन :- इस क्रिया में सड़े-गले एवं मृत पदार्थों को केंचुए आदि सूक्ष्मजीवों द्वारा छोटे-छोटे खण्डों में तोड़ दिया जाता है।

(ii) निक्षालन :- इस प्रक्रिया में खण्डित पदार्थ जल की सहायता से जमीन के अन्दर चले जाते हैं इसे निक्षालन कहते हैं।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iii) अपचय :- इस क्रिया में सूक्ष्मजीव भूमि के अन्दर रहकर अपना कार्य करते हैं तथा अपघटित पदार्थों को और अधिक खण्डित करते हैं जिससे अकार्बनिक पदार्थ सरल अकार्बनिक पदार्थों में बदल जाते हैं।

(iv) ह्यूमीकरण :- इस प्रक्रिया में एक क्रिस्टलरहित भूरे पदार्थ का निर्माण होता है जिसे ह्यूमस कहते हैं। यह पदार्थ मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि करता है, इस प्रक्रिया को ह्यूमीकरण कहते हैं।

(v) खनिजीकरण :- ह्यूमीकरण प्रक्रिया के पश्चात शेष क्रिस्टलयुक्त पदार्थ अपघटित होकर खनिजों का निर्माण करते हैं जो पादपों को कच्चे माल के रूप में उपलब्ध होते हैं, यह प्रक्रिया खनीजीकरण कहलाती है।

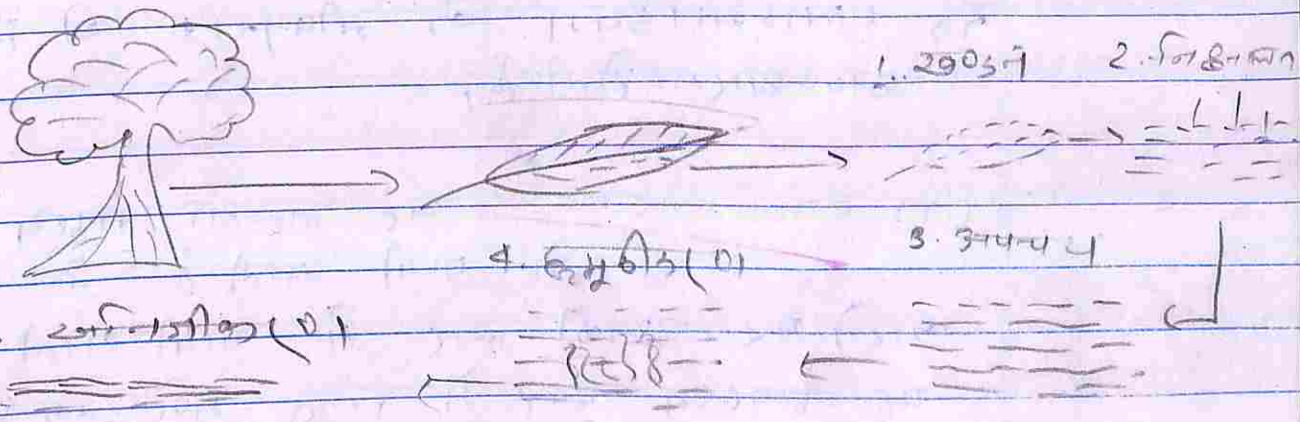

→ इसके उत्पाद के रूप में अपरद, ह्यूमस व खनिजों का निर्माण होता है।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(18)

(i) मलेरिया के दो लक्षण:-

- कम्पकम्पी के साथ तेज बुखार।
- 3-4 दिनों में बुखार की पुनरावृत्ति।
- खांसी आना।

2

(ii) प्लाज्मोडियम का जीवन चक्र:-

प्लाज्मोडियम अपना जीवनचक्र दो परपोषियों में पूर्ण करता है।

1. मानव
2. मच्छर

→ प्लाज्मोडियम लैंगिक जनन हेतु मच्छर पर तथा अलैंगिक जनन हेतु मानव पर निर्भर करता है।

मच्छर की लार में प्लाज्मोडियम पाया जाता है जो मानव को काटने पर रक्त में प्रवेश कर जाता है।

→ प्लाज्मोडियम के जीवनचक्र की निम्न अवस्थाएं होती हैं।

(A) स्पोरोज्वॉइट :- यह अवस्था मनुष्य के रक्त में पायी जाती है जो मच्छर के काटने पर उनकी लार में पायी जाती है, यह अवस्था रक्त में 1:30 घण्टे तक पायी जाती है तथा रक्त से यकृत में पहुंचकर एक नयी

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

अवस्था बनती हैं।

(B) शॉजॉइट :- यह अवस्था यकृत में पायी जाती हैं जहां यह ग्लाइकोजन कोशिका से ग्लूकोज प्राप्त करके प्लाज्मोडियम अलैंगिक जनन करता हैं तथा अपनी संख्या को बढ़ाता हैं।

2

(C) क्रिप्टोजॉइट :- यह एक अतिरिक्त अवस्था होती हैं जो यकृत से RBC तक जाने के दौरान बनती हैं।

(D) ट्रोफोज़ॉइट :- जब प्लाज्मोडियम RBC पर पहुंचता हैं तो उसमे मौजूद हीमोग्लोबिन को दो भागों में तोड़ता हैं, ग्लोबिन प्रोटीन व हिम लौह तत्व। हिम लौह तत्व हीमोजोइन कण का निर्माण करता हैं जिससे तेज कम्पकम्पी के साथ बुखार आता हैं। यह प्लाज्मोडियम की अत्यधिक सक्रिय प्रावस्था होती हैं।

2+2=4

(E) गेमीटोसाइट :- इस अवस्था में युग्मक निर्माण की प्रक्रिया शुरू होती हैं। इसमें प्लाज्मोडियम के युग्मक बनते हैं तथा मच्छर के पुन: काटने पर मच्छर की आंत में पहुंच जाते हैं।

(F) बीजाणुजनन :- इस प्रक्रिया में पुन: मच्छर के काटने पर युग्मक मच्छर की आंत में चले जाते हैं जहां से ये आमाशय में चले जाते

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

तथा बीजाणु निर्माण की प्रक्रिया शुरू होती है।

→ इसमें मच्छर अपना लैंगिक जनन पूर्ण करता है।

~~→ इस अवस्था~~ के

→ इस अवस्था के बाद पुनः स्पोरोजॉइट अवस्था आ जाती है।

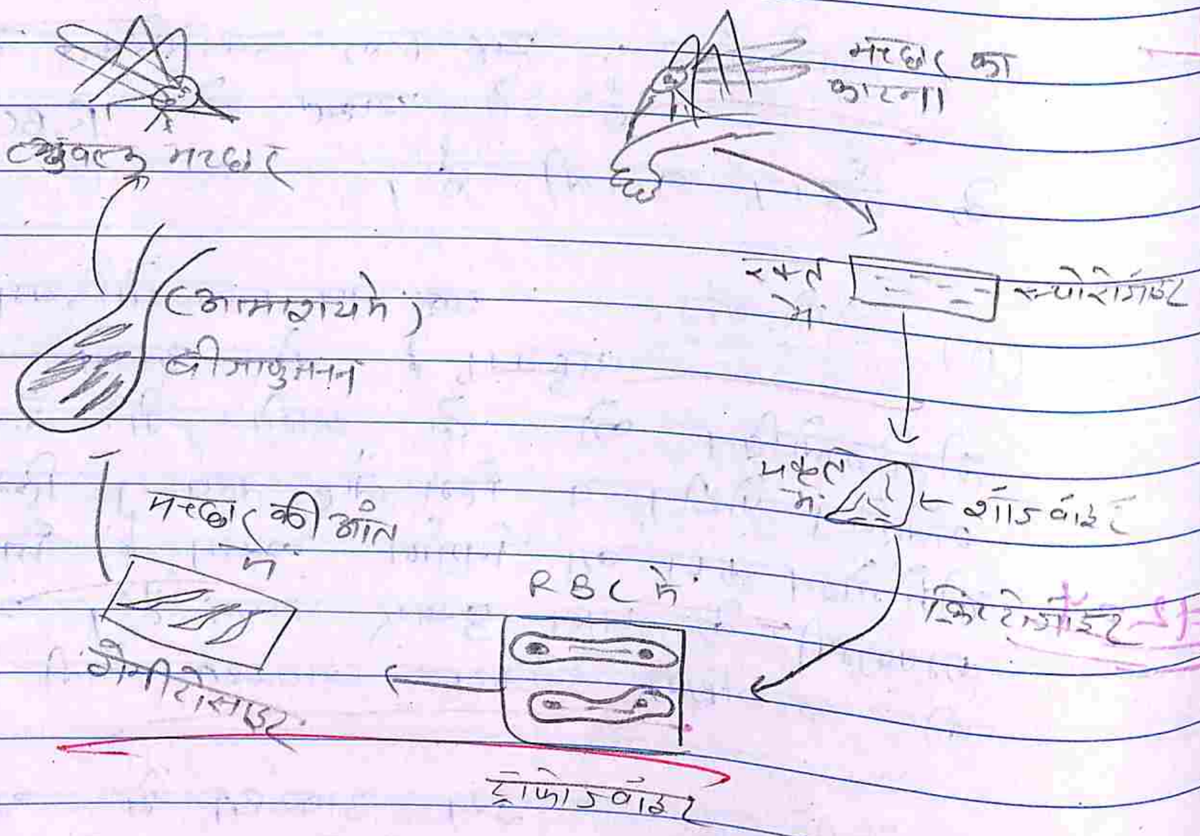

चित्र: प्लाज्मोडियम का जीवनचक्र।

* समाप्त *

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

द्वारा ...क	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

26

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026